Topic 20 प्रकृतिभाव संधि 3, प्रगृह्य

चादयोऽसत्त्वे ।

अद्रव्यार्थाश्चादयो निपाताः स्युः ।

यह भी संज्ञा-सूत्र है। उदाहरण के लिए 'लोधं नयन्ति पशु मन्यमानाः' में 'पशु' शब्द का अर्थ है - 'सम्यक्' अतः अद्रव्यवाची होने से यह 'निपात' संज्ञक होगा। किन्तु यदि 'पशु' शब्द का अर्थ 'जानवर' होगा, तो द्रव्यवाची होने से वह 'निपात' संज्ञक न होगा - यथा 'पशुं' नयन्ति।

प्रादयः ।

एतेऽपि तथा ।

इसप्रकार द्रव्य अर्थ न हो तो चादि और प्रादि गण में पठित शब्द 'निपात' संज्ञक होते हैं।

निपात एकाजनाङ् ।

एकोऽज् निपात आङ्वर्जः प्रगृह्यः स्यात् ।

इ इन्द्रः । उ उमेशः । वाक्यस्मरणयोरङित् - आ - एवं नु मन्यसे, आ एवं किल तत् । अन्यत्र ङित् - ईषदुष्णम् - ओष्णम् ।

'प्रगृह्य' संज्ञा के लिए निपात में दो बातें आवश्यक हैं: -

निपात एकाक्षर होना चाहिए ।

इनमें से अ, (आक्षेप अर्थ में), आ (वाक्य और स्मरण) इ (सम्बोधन, विस्मय), ई (सम्बोधन), उ (सम्बोधन, वितर्क), ऊ (सम्बोधन), ए (सम्बोधन,) ऐ (सम्बोधन), ओ (सम्बोधन), औ (सम्बोधन) और आङ् — (अल्प, मर्यादा आदि — ये ग्यारह एकाच् निपात हैं। प्रकृतसूत्र से 'आङ्' को छोड़कर शेष इस एकाच् निपातों की 'प्रगृह्य' संज्ञा ~~होती~~ होती है।

ओत् ।

ओदन्तो निपातः प्रगृह्यः । अहो ईशाः ।

ओ, आहो, उताहो, हो, अहो और अथो — ये छः ओकारान्त निपात हैं। इनमें भी 'ओ' की प्रगृह्य संज्ञा तो पूर्वसूत्र से ही हो जाती है, अतः प्रकृत सूत्र से शेष पाँच ओकारान्त निपातों की ही प्रगृह्य-संज्ञा होती है।